टैगोर का शिक्षा दर्शन

टैगोर के शिक्षा दर्शन के तत्व मीमांसा-

गुरुदेव इस संसार को ईश्वर के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति मानते थे। उनके अनुसार ईश्वर के द्वारा निर्मित या जगत उतना ही सत्य है जितना कि ईश्वर। ईश्वर को इन्होंने साकार और निराकार दोनों ही रूपों में बताया है।

टैगोर शिक्षा दर्शन की ज्ञान मीमांसा

भारतीय दर्शन में व्यक्ति के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास तथा दोनों पक्षों के विकास को महत्वपूर्ण माना जाता है

टैगोर शिक्षा दर्शन की आचार मीमांसा

गुरुदेव का मानना है कि प्रेम के अभाव में मानव सेवा की बात तो दूर मानव सेवा का भाव भी जागृत नहीं किया जा सकता। मानव सेवा को ही गुरुदेव ईश्वर की सेवा मानते थे अतः गुरुदेव मानवतावादी व्यक्ति थे।

टैगोर के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत

1-मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।

2-मनुष्य का विकास उसके स्वयं के कर्म पर निर्भर करता है।

3-यह ब्रह्मांड ईश्वर द्वारा निर्मित है।

4-ईश्वर प्राप्ति के लिए एकात्म भाव आवश्यक है।

5-एकआत्म भाव के लिए मानव सेवा आवश्यक है।

6-ईश्वर वस्तु जगह दोनों ही वास्तविक एवं सत्य है।

7-मानव सेवा के लिए भौतिक सामर्थ्य एवं चरित्र बल आवश्यक है।

8-आत्मा परमात्मा का अंश है।

9-मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति है।

टैगोर के अनुसार शिक्षा का अर्थ

टैगोर की पुस्तक पर्सनालिटी के अनुसार सर्वोच्च शिक्षा वही है जो संपूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।

टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य

1-नैतिक विकास

2-आध्यात्मिक विकास

3-शारीरिक विकास

4-व्यक्तिक एवं सामाजिक विकास

5-बौद्धिक विकास

6-सांस्कृतिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भावना का विकास

7-व्यावसायिक विकास

टैगोर के अनुसार पाठ्यक्रम

साहित्य, प्रकृति अध्ययन, इतिहास भूगोल, विज्ञान आदि। प्रयोगशाला, कार्य ड्राइंग, मौलिक रचना, नाटक भ्रमण, बागवानी ,क्षेत्रीय अध्ययन आदि इसके अतिरिक्त समाज सेवा छात्र स्वशासन खेलकूद आदि

टैगोर के अनुसार शिक्षण विधि

1-क्रिया विधि

2-स्वाध्याय विधि

3-प्रयोग विधि

4-मौखिक विधि

5-विश्लेषण विधि

6-वाद विवाद विधि

टैगोर के अनुसार शिक्षक की भूमिका

टैगोर के अनुसार वास्तविक शिक्षक वही है जो बालकों को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ स्वयं भी निरंतर ज्ञान की खोज में लगा रहे। टैगोर चाहते थे कि शिक्षक स्वयं को भी छात्र अवस्था में ही अनुभव करें छात्र को प्रेरणा प्रदान करें और विषय को जीवन के साथ संबंध करके बढ़ाएं।

टैगोर के अनुसार शिक्षार्थी का स्थान

गुरुदेव बालक को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक स्वतंत्रता देने के पक्षधर में थे और उसके मस्तिष्क को इतनी स्वतंत्रता और अधिकार प्रदान किया जाए कि वह अपने भविष्य का निर्माण स्वयं कर सके।

टैगोर के अनुसार विद्यालय

गुरुदेव के अनुसार विद्यालय को हार से दूर प्रकृति के शांत वातावरण में स्थित होना चाहिए। विद्यालय को राष्ट्र का प्रतिनिधि होना चाहिए।

टैगोर के अनुसार अनुशासन

गुरुदेव अनुशासन को बाहें अवस्था के रूप में नहीं आंतरिक भावना के रूप में स्वीकार करते थे। गुरुदेव आत्मानुशासन के पक्ष में थे।

शिक्षा में टैगोर का योगदान

1-प्रकृति को महत्व

2-विश्व बंधुत्व की शिक्षा

3-शिक्षा के संबंध में व्यापक दृष्टिकोण

4-धर्म के संबंध में नवीन दृष्टिकोण

5-पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों का समन्वय

6-मानवता की शिक्षा

7-विश्व भारती की स्थापना

शिक्षा के विभिन्न क्षेत्र

जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय शिक्षा।